IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भक्ति काव्य में स्त्रीवादी चिंतन

डॉ. सीमा शर्मा
सहायक प्रोफेसर
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

स्त्री और पुरुष समवेत रुप से सृष्टि के जन्मदाता हैं। मानव सृष्टि में समाज के सृजन का श्रेय पूर्णतः नारी को जाता है।आदि पुरुष जंगली थाए अपनी आवश्यकतानुसार प्रतिदिन शिकार करके स्वतंत्र रूप से कहीं भी रह लेता था। परिवार ए कुटुम्ब और समाज की अवधारणा को नारी की भावना ने जन्म दिया। नारी ही वह महत्वपूर्ण सूत्र बनी जिससे परिवारए कुटुम्ब और समाज जुड़ता था। नारी की इसी सृजनात्मक भावना के कारण मानव सृष्टि प्रगति की ओर उन्मुख होती हंसी। अनेक रूपों में अर्द्धनारीश्वर का रूप इस तथ्य को इंगित करता है कि अर्द्धनारीश्वर के रूप में शिव का स्वरूप नारी और पुरुष दोनों की सहभागिता और समभागिता का है।स्त्री और पुरुष के आधे-आधे अंगों के सहयोग से निर्मित अर्द्धनारीश्वर नारी की स्थिति को रेखांकित करता है। अर्द्धनारीश्वर का आधी स्त्री और आधे पुरुष का स्वरूप इस ओर भी संकेत करता है कि नारी पुरुष के समान शक्तिशाली बने और पुरुष नारी के समान कोमल भावनाओं से युक्त हो तभी श्रेष्ठ और पूर्णता की स्थिति हो सकती है।स्त्री- पुरुष दोनों एक -दूसरे के पूरक हैं। एक के अभाव में सृष्टि को आगे नहीं बढ़ाया जा सकता। सृष्टि निर्माण में जब दोनों का योगदान बराबर है तो उनका स्तर भी समान होना चाहिए।

समाज एक ओर प्रगति की दिशा में बढ़ रहा था दूसरी ओर समाज में पुरुष का वर्चस्व भी बढ़ता जा रहा था। पुरूष का वर्चस्व बढ़ने से समाज की जन्मदात्री का स्थान निम्न से निम्नतर होता चला गया। आधी मानव सृष्टि शासक थीए नियंता थी तो आधी मानव सृष्टि निरन्तर पददलित हो रही थी। नारी मानवता स्थान खोकर श्देहश में परिणत हो गयी। पुरूष की भोगवादी ताकत ने उसका श्वस्तुश की भांति आदान-प्रदान किया।

मध्यकालीन समाज में विदेशी आक्रमणों के परिणामस्वरूप भारतीय नारी की स्वतंत्रता का परिदृश्य बदलने लगा। समाज के प्रत्येक वर्ग में नारी की स्थिति सोचनीय हो गयी। दिनकर जी ने अपनी पुस्तक श्संस्कृति के चार अध्यायश में लिखा है श अल गजाली ने लिखा है औरतों से राय लेना ठीक है लेकिन आचरण हमेशा विपरीत करना चाहिए.... नबी ने कहा है औरत की रचना छाती की टेढ़ी हड्डी से की गयी है। इसलिए तुम औरत को झुकाना चाहोगे तो वह टूट जाएगी और स्वतंत्र छोड़ोगे तो वह और भी टेढ़ी हो जाएगी।श्श इस प्रकार नारी की सृष्टि को श टेढ़ी हड्डीश से बताकर समाज में उसका स्थान गिराया जा रहा था। मध्यकालीन समाज में नारी मात्र भोग्या थी। वासना की आंधी में सारे मूल्य धराशायी हो गये। समाज का पतन के गर्त में गिरना अवश्यंभावी था श क्योंकि विलासिता जब चित्रगत का के साथ प्रकट होती है तो केवल विनाश की ओर ले जाती है श आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी

मध्यकाल में नारी सत्ता प्राप्त पुरुष के भवन की शोभा थी। वह मां ऐसी श वस्तुश थी जिसका पुरुष की इच्छा से आदान-प्रदान किया जाता था। सुन्दर नारी का अपहरण कर लेना आम बात थी।चाहे वह पद्मिनी हो अथवा जोधाबाई सभी की कमोवेश एक जैसी स्थिति थी। ऐसे समाज में जब शाही स्त्रियों का कोई अस्तित्व नहीं था तो आम स्त्री का व्यक्तित्व तो दूर तक कहीं परिलक्षित नहीं होता। विजित राजा द्वारा पराजित राज्य की स्त्रियों का उपभोग उसके सैनिकों के लिए करना आम बात थी।। नारी को अपहरण और अपमान से बचाने के लिए उसके लिए अवगुंठन आवश्यक कर दिया गया। नारी को असूर्यपश्या रखना आदर्श स्थिति मानी गयी।

मध्यकालीन समाज में नारी की इसी सोचनीय स्थिति के दर्शन भक्ति काव्य में मिलते हैं। अवगुंठन और अभिव्यक्ति का अधिकार न होने के युग में सर्वप्रथम मीरा का विद्रोह दिखाई पड़ता है। मीरा राठौड़ राजपरिवार की पुत्री और सिसौदिया परिवार की बहू थीं। जहां सती प्रथा का चलन था लेकिन विधवा होने के बावजूद मीरा परंपरानुसार सती नहीं हुईं। भोजराज की मृत्यु के बाद मीरा की सास कुँवरिबाई ने उन्हें सती हो जाने का परामर्श दिया। कुँवरिबाई ने मीरा से कहा थाए श सती हो जाओ ताकि स्वर्ग में भी अपने पति से जाकर मिल सको।श इस पर मीरा ने बहुत ही सटीक उत्तर दिया श मैं न चोरी करती हूँ और न कुमार्ग पर चलती हूँ। न अनाचार करती हूँ और न अत्याचार सहन करती हूँ। न किसी को सताती हूँ और न रूलाती हूँ। मैं अपने हाल में मस्त रहकर मनमोहनए नटनागर ए गिरिधर-गोपाल का भजन करती हूँ। मन्दिर में दर्शन करती हूँ तथा भागवत् कथा -लीलाओं का श्रवण करती हूँ। मनुष्य जन्म चौरासी लाख योनियों को भोग लेने के पश्चात् मिलता है। ऐसे सुन्दर अवसर को जान बूझकर बर्बाद करके जल मरना कहाँ की बुद्धिमानी है। मैं मनुष्य जन्म को सफल करने हेतु सती होने के बजाय गिरिधर का भजन करूंगी।श इस प्रकार मीरा अपनी भावनाओं और विचारों में एकदम स्पष्ट थीं। मीरा का स्थान उन महान स्त्रियों में सर्वोपरि है जो अपने लक्ष्य के प्रति पूर्णतः समर्पित होकर जीती रहीं। उन्होंने परिवार और समाज के द्वारा दिए जा रहे कष्टों एवं विरोधों की परवाह नहीं की और अन्ततः अपने लक्ष्य को प्राप्त किया। मीरा लिखतीं हैं:

श मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।
.....
छांडि दई कुल की कानि कहा करि है कोई।
संतन ढिंग बैठि- बैठि लोकलाज खोई।
चूनरी के किसे टूकए ओढ़ि लीन्ही लोई।
मोती मूंगे उतारि बनमाला पोई ।श

मध्यकालीन नारी का विद्रोहए अभिव्यक्ति की छटपटाहटए ऐसी परम्पराओं का खंडनए जो उसे परतंत्रता की बेडियों में जकडता हैए सभी कुछ सहजता से स्पष्ट हो जाता है। श चुनरीश उस परम्परा का प्रतीक बनकर उभरती है ए जो परिवार की कुल प्रतिष्ठा के नाम पर स्त्री को ओढ़ा दी जाती है। उस प्रतिष्ठा की रक्षा करने का सारा दायित्व केवल स्त्री का हैए पुरुष की उसमें कोई भागीदारी नहीं है क्योंकि ऐसी कोई भी शर्त पुरुष पर लादी नहीं जाती। स्त्री उस परम्परा रूपी चुनरी को आजीवन ढ़ोती है और परम्परा को ढोने की समस्त प्रक्रिया में वह स्वयं का व्यक्तित्व खो बैठती है । मीरा उस परम्परा के ए जो एकतरफा और पक्षपातपूर्ण हैए टुकड़े-टुकडे कर देती है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह कि स्त्री का श्रृंगारए वस्त्र ए उठने-बैठनेए व्यवहार करने का निर्धारण समाज करता है।यानी समाज यह बताता रहा है कि सधवा स्त्री है तो उसकी वेशभूषा क्या होगीए विधवा स्त्री है तो वह कैसे वस्त्र पहनेगी। वह किससे बात कर सकती है और किससे नहीं। इन सभी परम्पराओं का खंडनए अभिव्यक्ति की छटपटाहट और अपने स्वत्व की प्रबल स्थापना मीरा के काव्य में स्पष्ट परिलक्षित होती है।

श भजन करस्यां सती न होस्यां मन मोह्यो घण नामी।श अपने श्स्वत्वश की स्थापना के लिए समाज ने उनसे जो मूल्य मांगा उन्होंने निडरता और साहस से दिया। अनेक यातनाएं यहीं एविष का प्याला भी पियाए यह सभी तथ्य इतिहास विदित हैं।

नारी स्वतंत्रता की आकांक्षाए नारी अस्मिता और नारी अभिव्यक्ति की पुरजोर स्थापना सूरदास के श भ्रमर गीत सारश में भी स्पष्ट परिलक्षित होती है। सूरदास ने अपने काव्य में नारी को पुरूष के समान बराबरी का दर्जा दिया है। श योनि शुचिताश के आवरण से मुक्ति दिलाने के लिए श्री कृष्ण ने पहला कदम उठाया। यही नहीं उन्होंने नारियों के साथए राधाए गोपियों आदि के साथ मिलकर प्रेम का सम्बन्ध स्थापित किया। सम्पूर्ण मध्य काल में नारी यदि कहीं नर के बराबर हुई तो वह सिर्फ ब्रज में और कहीं नहीं। स्वतंत्र प्रेम की अभिव्यक्ति के लिए श्रास लीला श जैसे आयोजन हुए। जहां स्त्रियां भी उतना ही स्वतंत्र और उन्मुक्त होकर जीवन जी सकतीं थींए जितना कि पुरुष। श भ्रमर गीत सारश में जब उद्धव उन पर सहज प्रेम का मार्ग छोड़कर नीरस ज्ञान का भार लादने लगते हैंए तो गोपियां अपने चयन पर दृढ़ रहती हैं -

श आयो घोष बडो व्यापारी।लादि खेप गुन ज्ञान जोग की ब्रज में आन उतारी। श
यह वह नारी नहीं हैए जिसे गाय की भांति किसी भी खूंटे से बांध दो। यह वह सशक्त नारी है एजो अपने स्वतंत्र विचारोंए भावनाओंए आकांक्षाओं एवं स्वप्नों के समक्ष किसी भी प्रकार के थोपे गए विचार स्वीकार नहीं करती। सूरदास ने जिस नारी की स्थापना अपने काव्य में की हैए वह अनेक स्थानों पर अपने विचारों और अपने चयन की दृढ़ता दिखाती है-

श्हमारे हरि हारिल की लकड़ी।
मन वचन क्रम नंद नंदन सोम पर यह दृढ़ करि पकरी। श
और संदेह तथा वैचारिक मतैक्य होने पर बड़ी समझदारी से प्रश्न भी करती है-

श निर्गुन कौन देस को बासीघ
को है जनक जननि को कहियत एकौन नारि को दासीघ श
यह वह ग्रामीण स्त्री है जो पांडित्य से भरे विद्वान समझे जाने वाले उद्धव से तर्क करनेए उसका खंडन करने का साहस रखती है।

तुलसीदास ने भी समकालीन नारी की दशा और दिशा पर बड़ी उदारता से प्रकाश डाला है। तुलसी कहते हैं कि उस समय शिक्षाएज्ञान और सम्मान से वंचित नारी जड़ और मूर्ख समझी जाती थी इसलिए तुलसीदास ने पार्वती के मुख से कहलवाया कि उन्होंने मनए वचन और कर्म से शिवजी की आराधना की है अतः वे वेदान्त - विषयक मत पर संभाषण करने का अधिकार रखती हैं। तुलसीदास ने नारी स्वातंत्र्य की आवश्यकता को भी समझा इसलिए वे लिखते हैं-

श तक विधि सृजहीं नारी जग माहीं।
पराधीन हेतु सपनेहु सुख नाहीं।श

पुरूष के अधीन होकर जो नारी अपना व्यक्तित्वए अपना श स्वत्व श खो बैठती हैए वह स्वप्न में भी सुखी नहीं हो सकती। इसी प्रकार तुलसी के काव्य में सुदृढ़ व्यक्तित्व की स्वामिनी सीता भी दिखाई देती हैं। जो अपने कर्मफल तथा अपने व्यक्तित्व की दृढ़ता से अमोघ आशीर्वाद देने की हैसियत रखती हैं-

श आसिष दीन्हि रामप्रिय जानाएहोहु तात बल सील निधाना ।
अजर अमर गुननिधि सुत होहुए करत बहुत रघुनायक छोहू।
अब कृत- कृत्य भयहु मैं माताए आसिष तव अमोघ विख्याता। श

तुलसीदास ने सीता को राम की शक्ति के रूप में दर्शाया है। साथ हीए तुलसी समाज में नैतिकता के बंधन को अनिवार्य मानते थे ए इसलिए जब गौरवमयी नारी अपनी गरिमा खोकर तथा उच्छृंखल होकर शूर्पणखा के रूप में प्रणय- भिक्षा की भीख मांग रही थीएतब उन्होंने नारी के अभिसारिका रूप की निंदा की है।

इस प्रकार ए हम देखते हैं कि भक्तिकाल में मध्यकालीन सामंती मानसिकता में नारी अपने श स्वत्वश की स्थापना के लिए छटपटातीए संघर्ष करती दिखती है। भक्ति युगीन नारी शिक्षा के महत्व को समझती है। उसके पास अपनी विवेक दृष्टिए तर्क शक्ति विद्यमान है। सूरदास के काव्य में तो वह खुलकर प्रेम

अभिव्यक्ति करने के लिए भी स्वतंत्र है। मीरा के काव्य में वर्णित नारी समाज की सड़ी-गली परम्पराओं से विद्रोह करती हुई दिखाई देती है। परम्परा के नाम पर नारी पर जो कुरीतियां लाद दी गयीं जिन्होंने उसे या तो श देवीश के रूप में देखा या श पतिताश के रूप में देखा । पर उसे सहज भाव के साथ श मानवीश नहीं माना। भक्ति युगीन नारी इसी विचार धारा के साथ संघर्ष करती हुई स्पष्ट परिलक्षित होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1ण्मानव सभ्यता का विकास- डॉ रामविलास शर्मा
2ण्संस्कृति के चार अध्याय-रामधारी सिंह दिनकर
3ण् आधुनिक बोध- रामधारी सिंह दिनकर
4ण् नारी स्वातंत्र्य के बदलते रूप- डॉ. रेणुका नैयर
5ण्कबीर- आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
6ण् कबीर ग्रंथावली- डॉ. श्याम सुंदर दास
7ण् मीरा रचना संचयन-माधव हाड़ा
8ण्भ्रमर गीत सारश्.आ.रामचंद्र शुक्ल